SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिन्दी बाल साहित्य पर केन्द्रित डॉ. श्रीकांत मिश्र के शोध का संक्षिप्त अनुशीलन

रश्मि त्रिपाठी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
प्रयागराज, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रश्मि त्रिपाठी, शोधार्थी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/12/2023
Plagiarism : 00% on 20/12/2023

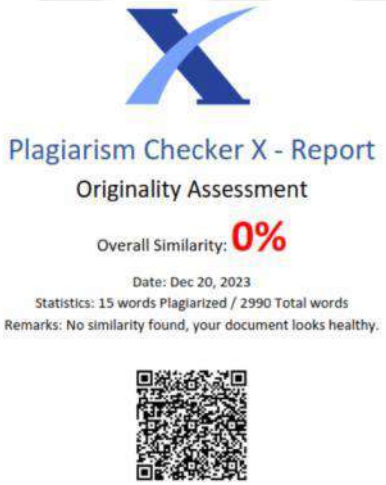

शोध सार

हिन्दी बाल साहित्य आज प्रत्येक क्षेत्र में अपने प्रतिमान स्थापित कर रहा है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, पहेलियां, चित्र कथाएं एवं यात्रा वृतांत इत्यादि ऐसा कौन सा क्षेत्र है जिसमें बाल साहित्य ने उच्च शिखर न प्राप्त किया हो। आज बाल साहित्य पर हजारों शोध एवं लघु शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं। इन अरुण से शोध कार्यों से बाल साहित्य जगत को क्या प्राप्त हुआ है इसकी समीक्षा आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस शोधपत्र की परिकल्पना में डॉ. श्रीकांत मिश्र के शोध का अनुशीलन करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

बाल साहित्य, समीक्षा, अनुशीलन, शोध परिचर्चा.

बाल साहित्य बालकों को ध्यान में रखकर लिखा गया साहित्य होता है। बच्चों में सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी जैसे अनेक मूल्य की स्थापना बाल रुचि के अनुरूप कर देना ही इस साहित्य की उपादेयता है। बाल साहित्य में अपनी रुचि महत्वपूर्ण नहीं बल्कि बालक की रुचि का ध्यान रखना आवश्यक है। बालकों का मनोविज्ञान समझे बिना बाल साहित्य लिखना मतलब व्यर्थ का श्रम करना। अगर बच्चों को बाल साहित्य प्रभावित नहीं कर सका तो वह उस साहित्य को कदापि पढ़ेंगे नहीं। बच्चों की रुचियों की परख कैसे हो और उनके परिमार्जन की रीति को हम निरंकार देव सेवक के एक संस्मरण से समझने का प्रयास करेंगे। इस संस्मरण की चर्चा सेवक जी अपनी पुस्तक 'बाल गीत साहित्य इतिहास एवं समीक्षा' पुस्तक की प्रस्तावना में लिखते हैं:

"बालगीतों के अध्ययन में मेरी रुचि बनारस विश्वविद्यालय के टीचर्स ट्रेनिंग कालिज में पढ़ते समय

उत्पन्न हुई थी। मैंने अपने विशेष अध्ययन का विषय 'बालगीतों की शिक्षा' लिया था। मैं अपने कालिज के अधिक अध्ययनशील छात्रों में नहीं था। छमाही परीक्षा में बैठा तो मैंने एक अक्षर भी नहीं पढ़ा था। परीक्षा कक्ष में बैठा कापी बन्द किए प्रश्न पत्र पर एक कविता लिख रहा था श्तुम बनो किताबों के कीड़े हम खेल रहे मैदानों में प्रिंसिपल मलकानी मुझे देखते हुए पास से निकले और बोले – 'तुम कुछ नहीं कर रहे हो। मैं तुम्हारी सब कविता भुला दूँगा।' प्रो. सुब्रह्मण्यम जब कापियां जाँच कर लाये तो कक्षा में सबको दिखाते हुए बोले– 'यह एक छात्र है जिसने एक शब्द भी कापी पर नहीं लिखा।' सारे छात्र जोर से खिलखिला कर हंस पड़े। तभी उन्होंने गम्भीर होकर कहा – 'लेकिन मैं ऐसे छात्र को पसन्द करता हूँ। वह कम से कम ईमानदार है। उसने कुछ नहीं पढ़ा इसलिए कुछ नहीं लिखा। पर तुममें से बहुतों ने पढ़ा कुछ नहीं और बहुत कुछ लिख कर मेरा समय व्यर्थ बरवाद किया।' उस परीक्षा के बाद मैंने अध्ययन प्रारम्भ किया और दिन रात पढ़ा। सबको बहुत आश्चर्य हुआ जब मैंने वार्षिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। ट्रेनिंग कालिज में पंडित सीताराम चतुर्वेदी और मनोविज्ञान के सुप्रसिद्ध लेखक पं. लालजी राम शुक्ल मुझसे बड़ा स्नेह करते थे। शुक्ल जी तो अक्सर मेरे कमरे में आते या मुझे अपने घर ले जाकर घंटों बातें किया करते थे। मेरी बाल– गीतों की रचना और उनके अध्ययन में रुचि इन्हीं दो गुरुजनों के आशीर्वाद का फल था जिसे लेकर मैं बनारस से लौटा था।

उसके दो वर्ष बाद हो मैंने अध्यापन कार्य से अवकाश ग्रहण कर लिया और वकालत शुरू कर दी। पर बालगीतों में रुचि के जो कीड़े मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न हो चुके थे वह बढ़ते ही रहे। स्कूलों कालिजों में कवि सम्मेलनों में मैं बुलाया जाता था।"[1]

इसी भांति डॉ. मिश्रा भी आचार्य के रूप में अपने शिष्यों का सदैव मूल्य परक मार्गदर्शन करते रहते हैं। बाल साहित्य पर आपने शोध ही नहीं किया है वरन पुस्तकें, शोध पत्र, समीक्षाएं एवं शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी किया है। डॉ. मिश्र की 'हिंदी बाल साहित्य में मूल्य की अभिव्यक्ति', 'डुग्गू के गीत', एवं 'श्रेष्ठ बाल गीतों की यात्रा' पुस्तकें प्रकाशित हो कर बाल साहित्य का मान वर्धन कर रही हैं। इस के साथ ही आप के अनेक शोध पत्र भी बाल साहित्य पर केंद्रित हैं। अनेक शोधार्थियों ने आप के निर्देशन में बाल साहित्य पर लघु शोध कार्य पूर्ण किए हैं। बाल साहित्य पर शोध कर रहे हैं विद्यार्थी भी आपसे मार्गदर्शन पा रहे हैं। 'रूहेलखंड परिक्षेत्र में स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य सृजनः एक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य कर डॉ. मिश्रा ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। बाल साहित्य पर केंद्रित इस शोध की चर्चा अनेक पुस्तकों, शोध पत्रों एवं व्याख्यानों में हुई है। पुस्तक समीक्षा में कोलकाता की डॉ रेश्मी पांडा मुखर्जी द्वारा इस शोध की चर्चा उल्लेखनीय है। इसके साथ ही बाल साहित्य में शोध और समीक्षा की सुरसरि को वेग प्रदान करने वाले डॉ. नागेश पांडे 'संजय' ने अपनी पुस्तक 'बाल साहित्य सृजन और समीक्षा' में इस शोध कार्य की चर्चा की है। प्रख्यात बाल साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ. सुरेंद्र विक्रम ने इस शोध का परिचय अपनी पुस्तक 'हिंदी बाल साहित्य शोध का इतिहास' की भूमिका में दिया है। इस पुस्तक में इस शोध का सारांश इस कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया गया हैः

आधुनिक युग–विसंगतियों आशंकाओं एवं हावी होती दुर्बलताओं का युग बनता चला जा रहा है और इन परिस्थितियों ने देश के भविष्य अर्थात् बालक को भी अछूता नहीं छोड़ा। यदि बालक का भविष्य संरक्षित करने एवं समाज के कलुश से बचाने का प्रयास अतिशीघ्र न किया गया तो खंड–खंड हो रहे मानवमूल्यों एवं विकलांग हो रही मानवता एक ऐसी भयंकर समस्या बन जाएगी जिसका निदान संभव ही नहीं होगा। इन सारी चिंताओं और आशंकाओं से यदि कोई मुक्ति प्रदान कर सकता है तो वह है उत्तम बाल साहित्य। इसका कारण यह है कि बाल साहित्य न केवल बालकों का मनोरंजन करता है, अपितु उनमें संस्कारों का बीजारोपण कर उन्हें राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक के रूप में सुनिर्मित भी करता है। इसी परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर बाल साहित्य की आवश्यकता – महत्ता समेत अनेकानेक नवीन एवं आवश्यक तथ्यों का उद्घाटन करने का प्रयास इस शोधप्रबंध में किया गया है।

शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में भारतीय विद्वानों एवं पाश्चात्य विद्वानों के अर्थ संबंधी दृष्टिकोणों का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि मनोरंजन, ज्ञान, प्रेरणा तथा समसामयिक आवश्यकताओं

की पूर्ति करने वाला साहित्य ही उच्चकोटि का बाल साहित्य कहा जा सकता है। बाल साहित्य और सामान्य साहित्य में अंतर की चर्चा भी कलापक्ष एवं भावपक्ष की दृष्टि से इस अध्याय में की गई है।

बाल साहित्य के उद्देश्य को निरूपित करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि समाज को उज्ज्वल भविष्य, सुख, समृद्धि तथा सौहार्द्र यदि कोई दे सकता है तो वह है–बाल साहित्य। बाल साहित्य का उद्देश्य समाज निर्माण एवं मनोरंजक रूप में बालक को शिक्षा प्रदान करना माना गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो संपूर्ण मानवता के लिए बाल साहित्य की आवश्यकता और महत्त्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है।

बाल साहित्य के विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए वर्गीकरणों का उल्लेख करते हुए निष्कर्षतः बाल साहित्य वर्गीकरण के चार आधार, रहन–सहन का आधार, आयु का आधार, विषय का आधार एवं विधा के आधार को मानकर वर्गीकरण किया गया है।

बाल साहित्य के संवर्धन एवं पोषण के विविध माध्यमों की चर्चा करते हुए दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की चर्चा भी इस अध्याय में सम्मिलित की गई है। द्वितीय अध्याय में बाल साहित्य के गौरवमयी अतीत पर यत्किंचित प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में वैदिक काल से वेदों–पुराणों में चली आ रही कथाओं में बाल साहित्य के बीज देखने का प्रयत्न किया गया है।

आदिकाल में कुछ कृतियों को बच्चों ने अपना लिया था जो उनके मनोनुकूल अथवा सरल रही होगी। इसी प्रकार भक्तिकाल की काव्य धारा में विभिन्न कवियों की सरल, उपदेशात्मक एवं मनोभावों के अनुकूल जो भी रचना हुई उसे बालकों ने अपने जीवन में उतारा एवं मनोरंजन तथा मार्जन भी किया। रीतिकाल के कवियों को दरबारी राग से अवकाश ही कहाँ था जो बालकों के विषय में कुछ सोच सकते थे, परंतु कुछ कवियों की कुछ एक रचनाओं में बालकों की रुचि रही जो उनके अनुकूल थीं। आधुनिक काल में बाल साहित्य के विकास को यथार्थ रूप से गति प्राप्त हुई जिससे बाल साहित्य को नई ऊँचाई मिली और आज के स्वर्णयुग की नींव स्वातंत्र्योत्तर युग के साहित्यकारों ने रखी। इन सारे तथ्यों का उल्लेख द्वितीय अध्याय का पाथेय है।

तृतीय अध्याय में बाल साहित्य की विविध विधाओं यथा – बाल कहानी, बाल कविता, बाल नाटक, बाल उपन्यास, बाल निबंध, बाल पत्रकारिता, बाल साहित्य समीक्षा, चित्रकथा, चुटकुले, पहेलियाँ इत्यादि के उद्‌भव विकास एवं वर्तमान स्थिति विषयक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिंदी साहित्य की भाँति बाल साहित्य में भी ढेरों विधाएँ प्रचलित हैं बल्कि वे सभी विधाएँ जो साहित्य क्षेत्र में हैं। बाल साहित्य में भी किसी न किसी रूप में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। यह बात अलग है कि कहानी और कविता बालकों की प्रिय विधाएँ हैं, किंतु अन्य विधाएँ भी बाल पाठकों को रिझाती हैं और उनका रसास्वादन भी कराती हैं। बाल साहित्य के क्षेत्र में लोकप्रियता के नये कीर्तिमान गढ़ने वाली महत्त्वपूर्ण विधाओं का वर्गीकरण ही इस अध्याय का प्रतिपाद्य है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत रुहेलखंड परिक्षेत्र की संरचना को दो मंडलों बरेली मंडल एवं मुरादाबाद मंडल में विभाजित कर अध्ययन किया गया है। बरेली मंडल में बरेली, बदायूँ, पीलीभीत, शाहजहाँपुर तथा मुरादाबाद मंडल में मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, ज्योतिबाफुले नगर जिलों का सम्मिलन है। इसके साथ ही परिक्षेत्र का मानचित्र भी प्रदर्शित किया गया है। रुहेलखंड परिक्षेत्र में बाल साहित्य की विकास यात्रा अपने आप में विशिष्ट और सोद्देश्यपूर्ण भी है। सृजन के क्षेत्र में जहाँ यहाँ के लेखकों ने विभिन्न विधाओं में अपनी उर्वर लेखनी के माध्यम से सृजनात्मक ऊँचाइयों को छुआ है वहीं बाल साहित्य आलोचना का तो श्रीगणेश ही यहीं से हुआ। इस परिक्षेत्र में पहले बृज, कन्नौजी, खड़ी बोली का अलिखित बाल साहित्य बच्चों का लम्बे समय तक मनोरंजन करता रहा। यह साहित्य बच्चों को परंपरागत् रूप से प्राप्त हुआ जिसे बच्चे अक्सर गाते–गुनगुनाते मिल जाते हैं। खासकर ग्रामीण बच्चों की टोली में ये खेलगीत वेद ऋचाओं से कम नहीं जिन्हें बार–बार दोहराकर यह भोले–भाले बालगोपाल अपना मनोरथ सिद्ध करते रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व यहाँ के लेखकों में पं. सुदर्शनाचार्य, रमाशंकर जेटली 'विश्व', शालिग्राम द्विवेदी, मदन मोहन व्यास, रामस्वरूप दुबे एवं शंकरदत्त पांडेय जैसे साहित्यकारों के नाम आदर से लिए जा सकते हैं जिन्होंने बाल साहित्य के बहुमुखी विकास में अपनी महती भूमिका अदा की।

स्वातंत्र्योत्तर काल में बाल साहित्य को एक नई ऊँचाई मिली इस समय अनेक स्वनामधन्य साहित्यकार बालकों के लिए उच्चकोटि का साहित्य सृजन करने लगे और प्रौढ़ साहित्य के प्रतिष्ठित लेखकों ने बाल साहित्य पर अपनी लेखनी चलाकर स्वयं को धन्य माना।

स्वतंत्रता के बाद जिन ख्यातिलब्ध साहित्यकारों ने सृजन को गति दी उनकी एक लंबी शृंखला दिग्गज मुरादाबादी स्वराज्य शुचि, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ. नागेश है। जिनमें सर्वश्री निरंकारदेव सेवक, शांति अग्रवाल, होरीलाल शर्मा श्नीरव मनोहर लाल वर्मा, पांडेय संजय डॉ. अजय जनमेजय, डॉ. राजीव पांडेय, चंद्रमोहन दिनेश एवं आइवर यूशियल इत्यादि के नाम लिए जाते हैं। इन साहित्यकारों के सृजन ने बाल साहित्य को स्वर्ण शिखर पर प्रतिष्ठित करने का पूरा प्रयत्न ही नहीं किया वरन् बाल साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में नए प्रतिमानभी स्थापित किए।

पंचम अध्याय में मानव सुधार में लगे संतों की ही भाँति मानव के भविष्य अर्थात् बच्चों के लिए समर्पित सुधी साहित्यकारों के प्रणम्य व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व के महत्त्व पर चर्चा तो की ही गई है साथ ही इनके उत्कृष्ट सृजन को यथासंभव रेखांकित करने का प्रयास भी किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर स्वनामधन्य बाल साहित्यकारों ने नवीन प्रयोगों से अनुप्राणित बच्चों के लिए उच्चकोटि का साहित्य सृजन किया। षष्ठ अध्याय में रुहेलखंड परिक्षेत्र में सृजित बाल साहित्य के वस्तु विधान पर यत्किचितचित प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यहाँ के लेखकों द्वारा रचित बाल साहित्य पूर्णतः बाल मनोविज्ञानसम्मत, सामाजिक और राष्ट्रीय परिवेश से संयुक्त, पारिवारिकता से स्निग्ध, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों से ओत–प्रोत तथा वैज्ञानिकता से परिपूर्ण है।

मनोविज्ञान बाल साहित्य का सर्वाधिक अनिवार्य पक्ष है। बालकों के मन, उनकी रूचि, अनुभूतियों और संवेदनाओं को जाने बिना श्रेष्ठ बाल साहित्य का सृजन संभव ही नहीं है। रुहेलखंड के समर्पित बाल साहित्यकारों ने मनोविज्ञान की परख भी खूब की है।

मनोविज्ञान की सूक्ष्मतर चुनौतियों को स्वीकार कर तदनुरूप बाल साहित्य की सर्जना करने में निःसंदेह रुहेलखंड के बाल साहित्यकारों को सफलता मिली जो इनके कृतित्त्व का ही एक अंग है जिस पर प्रकाश डालने का प्रयास भी इस अध्याय में किया गया है।

समाज मनुष्य के विकास की आधारशिला ही नहीं है बल्कि जीवन लीला का रंगमंच भी है और वह भी ऐसा रंगमंच जिस पर मानव जीवनलीला समाप्ति तक निरंतर मंचन करता रहता है। बच्चा इस समाज की प्रथम इकाई है और सामाजिकता उत्पन्न करना बाल साहित्य की प्रमुख विशेषता है जिसमें यहाँ का बाल साहित्य पूर्णरूपेण खरा उतरा है।

'कोई भी समाज तभी संपन्न बन सकता है जब वहाँ के लोगों के हृदय में नैतिक मूल्यों का वास हो' अपने देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. अबुल कलाम के इस कथन के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो रुहेलखंड के साहित्यकार इस विषय पर सजग रहे हैं। हर्ष इस बात का है कि इस संवेदनशील विषय पर रुहेलखंड के साहित्यकारों ने तन्मयता से विचार ही नहीं किया वरन् बच्चों के लिए उपयोगी साहित्य सर्जना भी की, जो इस दिशा में प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है, जिसकी पुष्टि क्षेत्र सृजित बाल साहित्य भंडार स्वतः कर रहा है।

हमारी संस्कृति को समूचा विश्व बड़े आदर तथा सम्मान के भाव से देखता ही नहीं वरन अनुसरण करने को लालायित भी रहता है। यह वही संस्कृति है जिसके बल पर भारत ने विश्वगुरु के पद को सुशोभित किया। यहाँ के साहित्यकारों ने समय–समय पर संस्कृति की रक्षा के लिए।

उल्लेखनीय रचनाओं का सृजन किया जिसका अध्ययन भी इस अध्याय का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। आधुनिक युग विज्ञान का युग है। बाल साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सकता। रुहेलखंड परिक्षेत्र के बाल साहित्यकारों ने भी उच्चकोटि का विज्ञान साहित्य लिखा है जिसका यत्किचित उल्लेख इस अध्याय में किया गया है। हिंदी

साहित्य जगत में रुहेलखंड नवीन प्रयोगों के लिए सदैव जाना जाएगा। यहाँ के समर्थ रचनाकार बाल साहित्य में नवीन प्रयोग जारी रखे हुए हैं. जिसका संगोपांग अध्ययन इस अध्याय का पाथेय है।

भाव यदि काव्य की आत्मा है तो शिल्प उसकी काया। इन दोनों में किसी का महत्त्व कम नहीं अर्थात् दोनों का श्रेष्ठ सामंजस्य ही साहित्य को सच्चे अर्थों में उपयोगी बनाता है इसीलिए सप्तम् अध्याय के अंतर्गत रुहेलखंड परिक्षेत्र में सृजित बाल साहित्य के शिल्पविधान पर चर्चा की गई है। यदि समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो प्रौढ़ साहित्य की अपेक्षा बाल साहित्य में शिल्प विधान का महत्त्व अधिक होता है क्योंकि बड़े, कठिन काव्य रचना को अपनी प्रौढ बुद्धि से समझ सकते हैं लेकिन बच्चों के लिए ऐसा संभव नहीं।

इस अध्याय में बालकों के लिए उपयुक्त भाषा, शैली का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। भाषा पर दृष्टिपात करते हुए यह तथ्य सहज ही उद्घाटित होता है कि सफल बाल साहित्य वह नहीं है जिसे पढ़ते–पढ़ते बच्चा अटक जाए अथवा किसी शब्द विशेष का अर्थ जानने के लिए उसे अभिभावकों की शरण में जाना पड़े। सरल और सुग्राह्य भाषा बाल साहित्य की पहली शर्त है। भाषा के स्तर पर रुहेलखंड के बाल साहित्यकारों को किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं कहा जा सकता। यहाँ के बाल साहित्यकारों ने भावानुकूल प्रभावोत्पादक और संप्रेषणीय भाषा को गढ़ने में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है, जिसकी समीक्षा इस अध्याय में की गई है।

शिल्प की सफलता में शैली की भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं होती बल्कि, यदि विषय के अनुकूल शैली का प्रयोग न किया जाए तो साहित्य का सारा सौंदर्य ही तिरोहित हो जाता है। शैलियों के उचित प्रयोग में इस क्षेत्र के साहित्यकार किसी से कम नहीं वरन् एक कदम आगे ही रहे हैं। इन सभी तथ्यों का उल्लेख भी इस अध्याय में करने का प्रयत्न किया गया है।

प्रतीक एवं बिम्ब बच्चों को आकर्षित करते हैं, प्रतीक तो बच्चों को बड़े ही प्रिय होते हैं, भले ही वे उनका प्रतीकार्थ न समझते हों। इन समस्त विषयों का विस्तृत उल्लेख भी इस अध्याय में विवेच्य रहा है।

रसों का कविता में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है बच्चे तो रस के विशेष प्रेमी होते हैं। नीरस कविता बच्चों का प्रेम नहीं प्राप्त कर सकती है। रसों के महत्त्व एवं अलंकारों के उचित प्रयोग का निरूपण इस अध्याय का एक अंग है।

बच्चा जन्म से ही छंदाकार होता है उसको अतुकांत रचना मोहने में सफल नहीं हो सकती क्योंकि बालक का तो रोना, हँसना, किलकना एवं गुनगुनाना भी छंदयुक्त होता है। बाल साहित्य में छंद के महत्त्व की स्थापना इस अध्याय का पाथेय है।

भाषा, शैली, रस, छंद, अलंकार एवं प्रतीक तथा बिंब की दृष्टि से रुहेलखंड के बाल साहित्य में क्या विशेष गुण अथवा दोष हैं। इस प्रकार के संपूर्ण तथ्यों को ध्यान में रखकर सप्तम अध्याय को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

अष्टम अध्याय में हिंदी बाल साहित्य को रुहेलखंड के योगदान पर समीक्षात्मक विचार किया गया है तथा सीमाएँ और चुनौतियों पर दृष्टिपात करते हुए विभिन्न संभावनाओं पर लेखनी चलाने का प्रयास किया गया है। श्रेष्ठ बाल साहित्य सृजन में इस परिक्षेत्र का योगदान तो अविस्मरणीय है ही साथ ही समीक्षा के क्षेत्र में तो निरंकारदेव सेवक जैसा व्यक्तित्त्व बाल साहित्य जगत में प्रायः दुर्लभ ही है। सेवक जी ने सन् 1966 ई0 में सर्वप्रथम हिंदी में बालगीत साहित्य नामक आलोचनात्मक पुस्तक का लेखन किया, जो शोध एवं समीक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होकर आज शोध एवं समीक्षा के पथ को प्रशस्त कर रही है। इस प्रकार रुहेलखंड के बाल साहित्यकारों द्वारा सृजन, समीक्षा, संपादन, शोध एवं पत्रकारिता इत्यादि अनेक क्षेत्रों में दिये गये योगदान की चर्चा इस अध्याय में वर्णित है। समय – समय पर समाज से उपजी चुनौतियों तथा सीमाओं के उल्लेख के साथ–साथ अनेकानेक संभावनाओं का उल्लेख इस अध्याय को पूर्णता प्रदान करने का एक प्रयास है।

कुल मिलाकर इस शोधप्रबंध को आठ अध्यायों में विभक्त कर इस परिक्षेत्र के समृद्ध बाल साहित्य भंडार की महिमा, उपादेयता गति–प्रगति एवं चुनौतियों समेत लगभग समग्र मूल्यांकन पर यत्किंचित प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

बाल साहित्य पर केंद्रित डॉ. श्रीकांत मिश्र के शोध की चर्चा इसलिए अनिवार्य है क्योंकि इस शोध से भारत के भविष्य अर्थात बच्चों का संबंध है। यह शोध परिक्षेत्र विशेष के सुनिर्मित बाल साहित्य का अध्ययन तो करता ही है साथ ही साहित्यकारों के प्रणाम में व्यक्तित्व को भी उद्घाटित करता है निश्चय ही बाल साहित्य समाज को दिशा देने के लिए अनिवार्य है। समाज की संपूर्ण चेतन को यदि जागृत करना है तो ऐसे शोध आवश्यक है यह शोध पत्र बाल साहित्य के महत्व और उपादेयता सिद्ध करने में समर्थ होगा ऐसा मेरा मत है।

सन्दर्भ सुची

1. देव सेवक निरंकार, (1983) *बालगीत साहित्य का इतिहास एवं समीक्षा,* उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ यूपी।
2. विक्रम सुरेंद्र, (2023) *हिंदी बाल साहित्य शोध का इतिहास,* भावना प्रकाशन, दिल्ली ।
3. पाण्डे नागेश 'संजय', (2012), *बाल साहित्य सृजन और समीक्षा,* विनायक पब्लिकेशंस, इलाहाबाद यूपी।
4. मिश्र श्रीकांत, (2023), *हिन्दी बाल साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति,* क्रॉउन पब्लिकेशन अहमदाबाद गुजरात।
5. मिश्र श्रीकांत, (2023), *श्रेष्ठ बाल गीतों की यात्रा,* बाल साहित्य प्रसार संस्थान शाहजहांपुर यूपी।

****